गुरु गोबिंद सिंह जी के विद्या दरबार का साहित्य: निकट अध्ययन

डॉ. नरेश कुमार

साहित्य का सम्बन्ध समाज और संस्कृति से है। मनुष्य सामजिक प्राणी है जो सामूहिक रूप से अपनी उन्नति और समृद्धि के लिए प्रयास करता रहता है। बाह्य उन्नति के साथ-साथ वह आंतरिक रूप में भी जीवन को अधिक सरस और सौन्दर्यमय बनाने का प्रयत्न करता रहता है। इसके लिए वह कला, संगीत और साहित्य का अनुसरण करता है। मानव समाज से सम्बंधित होने के कारण संस्कृति आंतरिक और बाह्य दोनों रूपों को दर्शाती है। संस्कृति का सम्बन्ध एक ओर जहाँ मनुष्य के लौकिक अभ्युदय से है तो वहीं दूसरी ओर चिंतन-मनन, धर्म, नीति और दर्शन जैसे आत्मतत्वों से है। संस्कृति समाज की वह धरोहर है जिसके होने से समाज का निर्माण होता है। जिस प्रकार संस्कृति समाज के परिवेश को दर्शाती है वैसे ही साहित्य संस्कृति को दर्शाने का कार्य करता है। जो भी साहित्य रचा जाता है वह समाज के अनेक पहलुओं को उल्लेखित करता है जिसमें से संस्कृति उसका एक अभिन्न अंग है। इसी प्रकार गुरु गोबिंद सिंह और उनके विद्या दरबार के कवियों ने अपने साहित्य के माध्यम से तत्कालीन समाज और संस्कृति को दर्शाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गुरु गोबिंद सिंह जी बहुपक्षीय प्रतिभा के धनी युगपुरुष थे। उन्होंने साहित्य और समाज के क्षेत्र में अपनी अग्रिम भूमिका निभाई। महान रचनाकार वही होता है जो राष्ट्र को शाश्वत जीवन मूल्य प्रदान करता है। इस दृष्टि में गुरु गोबिंद सिंह जी का स्थान सर्वोपरि माना जा सकता है। उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में भक्ति और शक्ति का समन्वय करके समाज में नए जीवन दर्शन को जन्म दिया। अपने साहित्य के माध्यम से उन्होंने अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध धर्म युद्ध किया। इस युद्ध में शस्त्र के साथ-साथ शास्त्र के सहयोग द्वारा अपने जीवन लक्ष्य में सफलता प्राप्त की। उनके व्यक्तित्व के विविध पक्षों पर दृष्टिपात करने पर हम देखते है कि उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को जाने बगैर उनके साहित्य को समझ पाना असंभव है। जैसा की कहा जाता है कि गुरु गोबिंद सिंह एक संत, कवि और महान योद्धा के रूप में विद्यमान थे। उन्होंने देश, जाति और धर्म के उत्थान के लिए अतुलनीय कार्य किये। उन्होंने सामान्य जन-मानस के कल्याण के लिए, धर्म की रक्षा के लिए, अन्याय और अत्याचार से लड़ने के लिए स्वयं शस्त्र तो उठाया ही, मूक तथा अधीर हो चुकी जनता को भी इसके लिए प्रेरित किया। उन्होंने समूचि जनता को अपने अधिकारों प्रति सशक्त बनाने का कार्य किया ताकि सामान्य-जनमानस अत्याचारों को सहन न कर उसका प्रतिकार करें। अलौकिक शक्तियों का वर्णन कर गुरु गोबिंद सिंह जी ने लौकिक जगत को इस तरह प्रेरित किया वह अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए, मानवीय जिजीविषा को बचाए रखने और जागृत होकर अधर्म और अत्याचारों का सामना कर सकें। इस कारण यह कार्य गुरु गोबिंद

सिंह जी की उदारता, शौर्यता और त्याग एवं बलिदान का परिचालक है। इसके साथ खालसा पंथ का निर्माण करना पंजाब इतिहास में एक अद्वितीय कार्य है। खालसा की स्थापना कर उन्होंने वीरों की एक ऐसी सैना तैयार की जिसने गुरु गोबिंद सिंह के निर्देश पर धर्म की रक्षा और मानव कल्याण के लिए अपने जीवन की आहुति दे दी।

गुरु गोबिंद सिंह जी का जन्म बिहार के पटना शहर में पिता गुरु तेग बहादुर और माता गुजरी जी के घर 22 दिसम्बर सन् 1666 ई. को हुआ था। इस भूमि का इतिहास त्याग, समर्पण और साहस से भरा है। जिसका प्रभाव गुरु गोबिंद सिंह जी के व्यक्तित्व में पूर्ण रूप से दिखाई पड़ता है। उन्होंने अपनी रचना "बिचित्र नाटक" में अपने जन्म स्थान का वर्णन करते हुए लिखा-

"मुर पित पूरब कियसि पयाना।
भाँति भाँति के तीरथ नाना।
जब ही जात त्रिवेणी भए।
पुन्न दान दिन करत बितए।
तहीं प्रकाश हमारा भयो।
पटना शहर बिखै भव लयो।" (सिंह,1990, पृष्ठ-169)

जब गुरु गोबिंद सिंह जी का जन्म हुआ उस समय पिता गुरु तेग बहादुर जी असम की यात्रा कर रहे थे। उन्हें पुत्र के जन्म का शुभ समाचार यात्रा के दौरान प्राप्त हुआ। वहीं से उन्होंने पटना की संगत का परिवार की भलीभांति देख-रेख करने के लिए धन्यवाद पत्र लिखा था। गुरु गोबिंद सिंह जी के जन्म के आरम्भिक चार वर्ष पटना में व्यतीत हुए। अल्प आयु में ही पिता द्वारा उनकी शिक्षा-दीक्षा का पूरा प्रबंध करवा दिया गया था। गुरु गोबिंद सिंह जी ने शास्त्र के साथ-साथ शस्त्र की भी ज्ञान प्राप्त किया। इसके साथ-साथ गुरु गोबिंद सिंह जी को अनेक भाषाओं जैसे पंजाबी, हिंदी और ब्रजभाषा का भी ज्ञान था। गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने समस्त साहित्य का सृजन इन्हीं रचनाओं में किया। पटना के पश्चात् वह आनंदपुर साहिब आ गए। जहाँ उन्होंने केवल नौ वर्ष की आयु में गुरु गद्दी को संभाला। वह सन् 1676 में गुरु गद्दी में विराजमान हुए। इसके पश्चात् 1685 ई. में वह सिरमौर की पहाड़ियों में यमुना किनारे पांवटा नामक स्थान पर आ बसे। यहां जीवन के तीन वर्ष (सन्1685 ई. से 1688 ई.) बिताए। पांवटा में रह कर गुरु जी के साहित्यिक कार्य को एक नई दिशा मिली। यहाँ रह गुरु साहिब ने अपनी प्रसिद्ध कृति 'कृष्णावतार'की रचना की। 'कृष्णावतार' में उनके रचना-स्थान का पूर्ण रूप से वर्णन किया गया है। गोपी-विरह खंड में उद्धव और गोपियों के संवाद की समाप्ति पर गुरु साहिब लिखते हैं-

"सत्रह के चवताल में सावन सुदि बुधवार
नगर पांवटा मों सु मैं रचियो ग्रन्थ सुधार।

फिर सम्पूर्ण 'कृष्णावतार' की समाप्ति पर लिखा -

"सत्रह पैताल महि सावन सुदि थिति दीप।
नगर पांवटा सुभ करण जमना बहै समीप।
दसम कथा भागौत की भाखा करी बनाइ।
अवन वासना नाहि प्रभु धरम जुद्ध को चाइ॥" (सिंह,2002, पृष्ठ-25)

इसी स्थान में रहकर गुरु गोबिंद सिंह जी ने भंगाणी तथा हुसैणी के युद्ध भी लड़े। इसके पश्चात् पांवटा साहिब में साढ़े चार साल व्यतीत करने के पश्चात् वह आनंदपुर साहिब लौट आये। आनंदपुर साहिब में रहकर उन्होंने अपनी साहित्यिक यात्रा को जारी रखा। यहीं रहकर उन्होंने उच्च कोटि के साहित्य की रचना की। उनकी रचनाएँ 'दशम ग्रन्थ' में संग्रहित हैं। उनकी रचनाओं में जापु, बिचित्र नाटक, शस्त्रनाममाला, ज्ञान प्रबोध, अकाल स्तुति, चंडी दी वार, चरत्रोपाख्यान, जफरनामा आदि शामिल हैं। जो उनके साहित्य प्रेमी होने का एक विशेष उदहारण है। "हिंदी साहित्य में जितने भी कवि हुए उन्होंने अपने ही युग को दृष्टि में रखते हुए अपने साहित्य की रचना की, परन्तु गुरु गोबिंद सिंह जी की रचनाओं का सिहांवलोकन करने पर हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि रीतिकाल में जन्मा हुआ कवि वीरगाथा काल, भक्तिकाल एवं रीतिकाल को अपने साहित्य में उतार सकता है। फलतः गुरु जी की रचनाएँ न केवल बीते हुए कालों की कड़ियों को जोड़ती है बल्कि अपने भावी युग अर्थात आधुनिक युग के लिए अनंत प्रेरणा एवं साहित्यिक-सांस्कृतिक उन्नयन का सन्देश देती है।" (सिंह,1971,पृष्ठ-535)

पांवटा साहिब में रहते हुए गुरु गोबिंद सिंह जी ने एक विशेष कार्य को पूर्ण किया। उन्होनें सन् 1686 ई. में पांच शिष्यों को संस्कृत की विद्या प्राप्त करने के लिए काशी भेजा था। इन शिष्यों में कर्म सिंह, गण्डा सिंह, राम सिंह, सैणा सिंह और वीर सिंह शामिल थे। काशी में शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् इन्होनें 1699 ई. में आनंदपुर आकर खालसा स्थापना के समय इन लोगों ने पञ्च प्यारों में भाई धर्म सिंह और दया सिंह के हाथों अमृतपान किया। अमृतपान करने वाले यह पांच सिक्ख ही 'निर्मल संत या निर्मले' कहलाये। इसके पश्चात् उन्होंने अपने जीवन का महत्वपूर्ण कार्य 'खालसा पंथ' निर्माण किया। 30 मार्च सन् 1699 का बैसाखी के दिन गुरु गोबिंद सिंह जी ने खालसा की स्थापना की। जो सिक्ख धर्म में एक महत्वपूर्ण दिन माना जाता है। खालसा निर्माण का वर्णन करते हुए उनके दरबारी कवि सेनापति लिखते हैं-

कल मैं करनहार निरंकार कला धार,
जगत के उधारवे गोविन्द सिंह आयो है।
असुर सिहारबे को दुरजन के मारबे को,
संकट निवारबे को खालसा बनायो है।

निंदक को निद दई सिख दई सिखन को,
ताके महातम ते रैन दिवस धिआयो है।
खालसे के सिखन की निंदकु जो निद करै,
जानि बुझि नरक परै नरक ऐसो बतायो है॥" (सिंह,2017,पृष्ठ-79)

इसके साथ गुरु साहिब जी ने आनंदपुर साहिब में एक विशाल सम्मेलन करवाया जिसमें सुदूर क्षेत्रों से आकर शिष्य एकत्रित हुए। जिसके पश्चात उन्होंने 'खालसा' के माध्यम से लोगों के हृदय में ईश्वरीय भक्ति का संचार करने का कार्य किया। पाचों व्यक्तियों से 'खालसा पन्थ' की शुरुआत की गयी थी। 'खालसा' को गुरु गोबिंद सिंह जी ने 'गुरु' के नाम से और गुरु को 'खालसा' के नाम से संबोधित किया। गुरु गोबिंद सिंह जी ने खालसा का वर्णन करते हुए लिखा-

"जागत जोत जपै निस बासर एक बिना मन नैक न जाने
पूरक प्रेम प्रतीत सजै व्रत गोर मडी मट भूल न मानै
तीर्थ दान दया तप संजम एक बिना नह एक पछानै
पूरन जोत जगै घट मैं तब खालसा ताहि नखालास जानै" (सिंह,2002,पृष्ठ-35)

खालसा पंथ निर्माण के पश्चात् गुरु गोबिंद सिंह जी ने सामान्य जनमानस के हृदय में नई चेतना का प्रवाह किया। जो जनता मुगलों के अत्याचारों से भयभीत थी वही जनता मुगलों के प्रति विद्रोह करने के लिए तैयार थी। गुरु गोबिंद सिंह जी न लोगों में विश्वास जगाया की उनका जन्म ईश्वर द्वारा दिए गए कार्य को पूर्ण करने के लिए हुआ है। और इसी के साथ उन्होंने नया जयघोष दिया-

"वाहिगुरू जी का खालसा
वाहिगुरू जी की फतेह" (सिंह,2014,पृष्ठ 06)

गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने जीवन में अनेक उल्लेखनीय कार्य किये। जो सदैव जनहीत में कार्य करते रहे। उन्होंने 'विद्या दरबार' को स्थापित कर साहित्य के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पंजाब इतिहास में दस गुरु परम्परा में साहित्य में अपनी अलग छवि स्थापित की है। दस गुरु परम्परा ने आरम्भ से ही साहित्यिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा को प्रोत्साहन व संरक्षण प्रदान किया। इन गुरुओं का साहित्य के विविध क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण प्रदेय माना जाता है, जिसमें गुरु गोबिंद साहिब का नाम उल्लेखनीय है। प्रथम गुरु नानक देव से लेकर गुरु अर्जुन देव के समय तक भी विद्या दरबार प्रचलित थे। इन विद्या दरबारों में केवल संतों, भक्तों और शिष्यों को ही आश्रय दिया जाता था। गुरु नानक देव अनेक स्थानों में जाकर साधु-संतों के साथ सतसंग किया करते थे। पंचम गुरु अर्जुन देव ने सभी गुरुओं की वाणी का संकलन कर उसे 'आदि ग्रन्थ' का नाम दिया। गुरु अर्जुन देव जी से पूर्व गुरुओं की वाणी

सचिकाओं के रूप में उपलब्ध थी। इन गुरुओं की वाणी के साथ अनेक संतों की वाणी भी शामिल की गई है। 'आदि ग्रन्थ' से यह बात तो स्पष्ट है कि सभी गुरुओं द्वारा वाणी को सुरक्षित रखने का प्रयास किया। जब छठे गुरु, गुरु गद्दी पर बैठे तब उन्होंने संतों और शिष्यों के साथ-साथ कवियों के दरबार को भी महत्त्व दिया। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गुरु गोबिंद सिंह जी के गुरु गद्दी पर बैठने से पूर्व भी विद्या-दरबार हुआ करते थे। परन्तु पूर्व में उन दरबारों में केवल संतों और दरबार के लोगों को मुख्यतः इनमें शामिल किया जाता था। गुरु गोबिंद सिंह जी ने संतों के साथ-साथ कवियों को भी दरबार में शामिल किया और इसे 'विद्या दरबार' की संज्ञा दी। गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबार मुख्यतः आनंदपुर और पांवटा में रहे। उनके विद्या दरबार में 52 कवियों का होना माना गया है। "गुरु गोबिंद सिंह के दरबार में 52 कवियों का होना प्रसिद्ध है, इन सभी कवियों का परिचय और कृतियाँ तो आज उपलब्ध नहीं हैं, परन्तु जो कुछ प्राप्त है उससे इस बात का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि गुरु गोबिंद सिंह ने अपने चारों ओर साहित्यिक वातावरण का निर्माण किया था।"(सिंह,1969,पृष्ठ-349) वहां स्थानीय कवियों के साथ साथ दूर-दूर के कवि अध्यात्म का ज्ञान ग्रहण करने आते थे। बाहर से आये कवियों में हंसराम, कुबरेश, सुखदेव, भाई नन्द लाल और चन्दन का नाम प्रमुख है। जो मुगलों के अत्याचारों के कारण गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबार में आए थे। स्थानीय कवियों में अणिराय, सेनापति, मंगल और गोपाल कवि थे जिनकी रचनाएँ आज भी उपलब्ध हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी का रचनाकाल सन् 1682 ई. से माना जाता है। संभव है कि दरबारी कवियों का रचनाकाल भी इसी के आस-पास का रहा होगा। दरबारी कवियों में जिन कवियों के नाम और रचनाएँ उपलब्ध हैं उनके अनुसार यह कहा जा सकता है कि सभी कवि एक समय में उपस्थित नहीं थे अपितु दरबार आते-जाते रहे होंगे। जिस समय यह दरबार पांवटा साहिब (सन् 1685 से 1689 ई. तक) में स्थित था। उस समय इन कवियों की संख्या अधिक थी। परन्तु आनंदपुर लौटने के पश्चात् जब मुगलों द्वारा सन् 1704 ई. में आनंदपुर के किले पर आक्रमण किया उस समय सभी कवि गुरु गोबिंद सिंह जी से बिछड़ गए। मार्ग में मुगलों के द्वारा किये गए अन्याय के कारण खालसा-सेना कि अत्यधिक हानि हुई, जिसमें रचनाओं का नष्ट होना भी शामिल था। जिस कारण विद्या दरबार की परम्परा का समापन हो गया। इस घटना का वर्णन करते हुए भाई संतोख सिंह लिखते हैं-

बावन कवि हुजुर गुर रहति सदा ही पास।
आवै जाहि अनेक ही, कहि जस ले धन रास।
तिन कवियन बानी रची लिखि कागद तुलवाय।
नौ मण होए तोल महिं सूखम लिखत लिखाय।
विद्याधर तिस ग्रन्थ को नाम धरयो करि प्रीत।

नाना विधि कविता रची रखि रखि नौ रस रीति।
मच्यो जंग गुर संग बड रह्यो ग्रन्थ सो बीच।
निकसे आनंदपुर तज्यो लूटयो पुन मिलि नीच।
प्रथम प्रथक पत्रे हुते लूटयो सु ग्रन्थ बखेर।
इक थल रह्यो न इम गयो जिसते मिल्यो न फेर।
बाहठ पत्रे कहूँ ते रह्यो अनंदपुरि माहि।
तिन तै लिखे कवित्त इहु गुर जसु वरन्यो जाहि। (सिंह,2011,पृष्ठ-5723)

गुरु गोबिंद सिंह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे और उन्होंने विविध विषयों की रचनाओं का सृजन कर साहित्य में अपना योगदान दिया। गुरु गोबिंद सिंह जी के साथ उनके 52 चिंतकों के साहित्य को प्रतिष्ठित करने में प्रमुख स्थान है। इन कवियों ने प्रत्येक विषय को आधार बनाकर रचनाएँ की। इन कवियों ने चाणक्य नीति, हितोपदेश और महाभारत के कई पर्वों का भाषानुवाद किया। इसी प्रकार कुछ कवियों ने गुरु जी के जीवन को साहित्य के द्वारा समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का भी कार्य किया। अधिकांश कवियों की फुटकर रचनाएँ ही उपलब्ध हैं और कुछ कवियों की रचनाएँ ग्रन्थ रूप में उपलब्ध हैं। अणीराय, आलम, अमृतराय, धन्ना, सेनापति जैसे अनेक कवियों ने दरबार की शोभा को बढ़ाने का कार्य किया। उनके द्वारा रचित साहित्य आज के समय में गुरु गोबिंद साहिब के जीवन को नई दृष्टि से समझने का मार्ग प्रशस्त करती है। उनकी अधिकांश रचनाएँ गुरु गोबिंद साहिब की युद्ध रणनीतियों और युद्धों का वर्णन करती हैं। सभी कवियों की रचनाओं का संकलन कर उसे **'विद्याधर'** नाम दिया गया। कहा जाता था कि इन रचनाओं का भार नौ मन से अधिक था। "इस ग्रन्थ में भारतीय दर्शन, पुराण और इतिहास के महान पंडितों का भाषानुवाद संकलित है। आनंदपुर हमले के समय इसका ज्यादातर भाग नष्ट हो गया था, केवल कुछ भाग ही उपलब्ध है। यह दरबारी कवि हजुरी कवि की संज्ञा से परिभाषित किये गए। इन कवियों के समूह को ही 'विद्या दरबार' कहा गया।" (पन्नू,2019,पृष्ठ-17) इन कवियों की सूचि संतोष सिंह जी की पुस्तक 'गुरु प्रताप सूर्य ग्रन्थ' में संकलित है। जो निम्नलिखित रूप से है- "उदयराम, अणीराय, अमृतराय, अल्लू, आसासिंह, आलम, ईश्वरदास, सुखदेव, सुखासिंह, सुदामा, सेनापति, श्याम, हीर, हुसैनअली, हंसराम, कल्लू, कुवरेश, खानचंद, गुणिया, गुरुदास, गोपाल, चंदन, चंदा, जमाल, टहकन, धर्म सिंह, धन्नासिंह, ध्यानसिंह, नानू, निश्चलदास, निहालचंद, नंदराम अथवा नंदसिंह, नन्दलाल, पिंडीदास, वल्लभ, बल्लू, विधिचंद, बुलंद, वृष, बृजलाल मथुरा, मदनसिंह, मदनगिरी, भल्लू, मल्लू, मालासिंह, मंगल, राम, रावल, रोशनसिंह, लक्खण राय

इस कवियों की सूचि अनेक मतभेद दिखाई पड़ते हैं। भाई वीर सिंह और प्यारा सिंह पदम् ने इन कवियों की सूचि 52 से अधिक बताई है। परन्तु सर्व-सहमति से इनकी संख्या 52 ही मानी जाती है। इस मतभेद के पीछे एक कारण यह भी है कि इन कवियों में अधिकांश कवियों की रचनाएँ उपलब्ध नहीं है। किसी भी रचनाकार की प्रमाणिकता उनकी रचना के आधार पर निर्भर करती है। अगर किसी रचनाकार के नाम के साथ उसकी रचना का नाम न हो तो उसकी प्रमाणिकता को सिद्ध करना कठिन कार्य है। परन्तु फिर भी सर्वमत से 52 संख्या को मानना उचित होगा। गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबारी कवियों में जिनकी रचनाएँ तथा छंद उपलब्ध हैं, उनकी सूचि निम्नलिखित रूप से है-

क्र.स	कवि का नाम	मौलिक रचनाएँ	भाषा-रूपांतरण
1.	अणीराय	जंगनामा गुरु गोबिंद सिंह(प्रकाशित) पंजाब निवासी	
2.	अमृतराय	फुटकर रचनाएँ (गुरु-प्रताप-सूर्य ग्रन्थ और कलगीधर चमत्कार) लाहौर निवासी	चित्र-विलास, (सिक्ख रेफ्रेन्स पुस्तकालय,पटियाला) सभा-पर्व (महाभारत) (काशी नरेश के निजी पुस्तकालय में)
3.	आसा सिंह	फुटकर रचनाएँ	
4.	आलम	श्यामस्नेही,आलमकेलि, माधवानल कामकंदला(प्रकाशित), सुदामाचरित्र(द्वारिकेश पुस्तकालय,काकरौली) फुटकर छंद सियालकोट निवासी	
5.	ईश्वरदास	फुटकर छंद	
6.	सुखदेव	अध्यात्म प्रकाश(प्रकाशित), ज्ञान प्रकाश, गुरु महिमा(नागरी प्रचारिणी सभा,काशी)	
7.	सुदामा	सुदामा जी की बारह खड़ी (नागरी प्रचारिणी सभा काशी) फुटकर छंद	

क्र.स	कवि का नाम	मौलिक रचनाएँ	भाषा-रूपांतरण
		बुंदेलखंड निवासी	
8.	सेनापति	गुरु शोभा (प्रकाशित) सुखसैन ग्रन्थ	चाणक्य नीति (प्रकाशित टिका)
9.	हीर	फुटकर छंद	
10.	हुसैन अली	फुटकर छंद	
11.	हंस राम	फुटकर छंद फतेपुर (उ.प्र)	कर्ण-पर्व महाभारत (काशी नरेश के निजी पुस्तकालय)
12.	कुबरेश	बरी नगर (उ.प्र)	द्रोण-पर्व महाभारत (पटियाला नरेश के निजी पुस्तकालय)
13.	गुरुदास	कथा हीर राँझान की, साखी हीरा घाट की (सेन्ट्रल पब्लिक लाइब्रेरी, पटियाला)	
14.	गोपाल	अनुभव उल्लास (पंजाब यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, चंडीगढ़)	
15.	चन्दन	फुटकर छंद	
16.	चंद कवि	'परीक्षा गुरु गोबिंद सिंह' (भाषा विभाग लाइब्रेरी, पटियाला) 'त्रिया चरित्र' (सिक्ख रेफ्रेन्स लाइब्रेरी, अमृतसर) फुटकर छंद लाहौर निवासी	
17	टहकन	रतनदाम जलालपुर(गुजरात)	अश्वमेध-पर्व महाभारत (रेफ्रेन्स पुस्तकालय,भाषा विभाग, पटियाला) सिक्ख रेफ्रेन्स पुस्तकालय,अमृतसर)

क्र.स	कवि का नाम	मौलिक रचनाएँ	भाषा-रूपांतरण
18.	धर्म सिंह	फुटकर छंद मुजफरपुर निवासी	
19.	धन्ना सिंह	फुटकर छंद	
20.	ध्यान सिंह	फुटकर छंद	
21.	नन्नू	फुटकर छंद	
22.	नंदराम अथवा नन्दसिंह	नंदराम पचीसी अम्बावती निवासी	
23.	नंदलाल	दीवान-ए-गाथा, जिंदगीनामा, तौ सौ फौसना, जोत विकास, गजनामा (पंजाबी), प्रकाशित	
24.	बुलंद	फुटकर छंद	
25.	बृजलाल	फुटकर छंद	
26.	मल्लु	फुटकर छंद	
27.	मंगल	फुटकर छंद	शल्य-पर्व (महाभारत) (महाराजा पटियाला के निजी पुस्तकालय)
28.	लक्खणराय	हितोपदेश (पंजाब भाषा विभाग पुस्तकालय , पटियाला) उन्ना निवासी	

समाज में जो घटित हो रहा है उसके आधार पर रचनाकार साहित्य की सृजना करता है। साहित्य के सामाजिक अध्ययन में तत्कालीन इतिहास और पृष्ठभूमि, लेखक का दृष्टिकोण, साहित्य का प्रभाव, लेखक का सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ आदि का अध्ययन आवश्यक है। साहित्य का सामाजिक अध्ययन विस्तृत और बहुआयामी है। इस कारण से इसका क्षेत्र भी व्यापक होता है। जिस प्रकार से समाज साहित्य के साथ जुड़ा है, उसी प्रकार संस्कृति भी समाज का अभिन्न अंग है। एक अच्छी

सामाजिक व्यवस्था की पहली शर्त है संस्कृति, क्योंकि संस्कृति मनुष्य केन्द्रित होती है। संस्कृति का आधार ही मनुष्य है, इसलिए जब संस्कृति विकृत होती है तब सामाजिक व्यवस्था से मानवीयता का हनन होने लगता है। इस कारण सामाजिक व्यवस्था भी विकृत हो जाती है। संस्कृति उन मानवीय संस्कारों का समूह है, जो मनुष्य के नैतिक उत्थान में सहायक है। किसी समाज विशेष में व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप को ही संस्कृति कहा जा सकता है। संस्कृति के अध्ययन का अर्थ है जीवन के यथार्थ को पारदर्शी तथा व्यवस्थित रूप में पूर्णतया पहचानना। प्राचीन समय से प्रचलित विचार, विश्वास और मान्यताएं संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। इन्हीं मान्यताओं को आधार बनाकर संस्कृति को अपनाया जाता है। इसी क्रम में गुरु गोबिंद सिंह और उनके दरबारी कवियों ने भी सामाजिक यथार्थ और संस्कृति को साथ लेकर अपने साहित्य के रूप में प्रस्तुत करने का कार्य किया है। इनके द्वारा समाज को नई दिशा देने का कार्य किया गया। उनके द्वारा रचित साहित्य हमें तत्कालीन समाज की अनेक घटनाओं से अवगत करता है। उनके द्वारा स्थापित विद्या-दरबार उस समाज के प्रसिद्ध शिक्षण सस्थानों में से एक था। वहां विभिन्न प्रकार की शिक्षा और शस्त्र-विद्या का प्रशिक्षण किया जाता था। उनके दरबारी कवियों ने गुरु गोबिंद सिंह और उनके समय की महत्वपूर्ण घटनाओं को साहित्यिक रूप में संरक्षित किया। गुरु गोबिंद सिंह और दरबारी कवियों ने भारतीय संस्कृति को समृद्ध करने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए साहित्य के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके विद्या-दरबार में उच्च कोटि के साहित्य की सृजना की गई। उनके कवियों ने भारतीय समाज में आध्यात्मिकता, धर्म और नैतिकता के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय कार्य किये हैं। उन्होंने साहित्य के माध्यम से समाज में वीरता और शौर्य को सामान्य जनमानस तक पहुँचाने का कार्य किया। समाज में फैली कुरीतियों जाति, धर्म के आधार पर भेदभाव का विरोध कर साहित्य में समानता और न्याय के सन्देश को प्रमुखता से प्रस्तुत किया। गुरु गोबिंद सिंह और उनके कवियों ने भारतीय संस्कृति और धरोहर को संजोकर रखने का भी कार्य किया और उन्हें संरक्षण प्रदान किया। इस कारण कहा जा सकता है कि गुरु गोबिंद सिंह और उनके दरबारी कवियों ने साहित्य के द्वारा सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों को नया रूप देने का कार्य किया ताकि समाज में फैली अनेकों कुरीतियों को समाप्त किया जा सके। गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबारी कवियों ने अनेक सामाजिक विषयों को आधार बनाकर साहित्य सृजन किया। उनके द्वारा लिखी गई युद्धपरक, प्रेम कथाएं आदि सामाजिक अध्ययन का आधार हैं। उन्होंने इन्हीं विषयों पर अपने साहित्य का निर्माण किया। युद्धपरक रचनाओं में गुरु गोबिंद सिंह द्वारा लड़े युद्धों का सुन्दर रूप में वर्णन किया है। अणिराय ने गुरु गोबिंद सिंह के युद्धों का वर्णन करते हुए 'जंगनामा गुरु गोबिंद सिंह' पुस्तक और सेनापति ने 'गुरु शोभा' नामक पुस्तक की रचना की। 'जंगनामा गुरु गोबिंद सिंह' पुस्तक में गुरु गोबिंद सिंह और अज़िम खां के मध्य युद्ध का वर्णन है। उसमें अणिराय ने युद्ध के कारण,

युद्ध की पृष्ठभूमि, शत्रुओं का वर्णन तथा युद्ध भूमि के दृश्यों का बड़े सुन्दर ढंग से चित्रण किया है। गुरु गोबिंद सिंह की सैना का सुन्दर चित्र प्रस्तुत करते हुए अणिराय लिखते है –

"चडि चलयो जुसिह गोबिद संग सैना सबल। जन पच्छम घनघोर उठ्यो पावस प्रबल।
मत मतंग उतंग धुजां फरहहि इव। घुरवा धावत लिये इन्द्र को धनुख सिव।
फिर धुरवां सेघर घाए धीरज धराधर यथा। कोर बांध गिर जाए, कीने बराबर।
बग पंत दंत दरसात बादल मेह को। चुए गंड मद पानी भारी देह को।
धाए मेघ जु डंबर अंबर से सरस। भई घुद रज रुंद सूर झांप्यो दरस।"
(गोयल,1998,पृष्ठ-21)

विजय का इतना सजीव चित्रण अन्य किसी कवि द्वारा नहीं किया गया। "इस वार में वह सारी साहित्यिक खूबियाँ शामिल हैं जो उत्तम वारों में पाई जाती हैं।.....जंग का दृश्य, युद्ध शब्दावली और घटनाक्रम आदि रचना को उत्तम वार का दर्जा देते हैं।" (सिंह,2023,पृष्ठ- 114)

तत्कालीन समाज मुगलों के अधीन था। जिस कारण समय-समय पर युद्ध होते रहते थे। मुगलों के अत्याचारों से सामान्य जनता की स्थिति अत्यंत शोचनीय थी। गुरु गोबिंद सिंह जी ने जनता के कल्याण के लिए मुगलों का डटकर सामना किया। जिसका वर्णन उनके कवियों ने बड़े सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया। इसी क्रम में सेनापति ने भी अपनी रचना में 'गुरु शोभा' गुरु गोबिंद सिंह के युद्धों का वर्णन किया है। 'गुरु शोभा' ऐतिहासिक रचना मानी जाती है। इसमें गुरु गोबिंद सिंह जी के जीवन के पांवटा साहिब से लेकर उनके निर्वाण तक के घटनाक्रम का वर्णन किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस रचना का मुख्य उद्देश्य गुरु गोबिंद सिंह जी के शौर्य का वर्णन करना है। इस रचना के चतुर्थ अध्याय में कवि गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा लड़े गए हुसैनी के युद्ध का वर्णन है। जिसका उदहारण देते हुए कवि लिखता है-

गयो खान जांदा हुसैनी पठायो। लीए फउज को संगि वह बेग धायो।
रहे मारगं बीचि राजे अपारि। करी रीति बिप्रीति तिन से अपारी।
लरिओ खेत को रोप कै खां हुसैनी। करी राज संगं उनै बाते पैनी।
लरिओ हिमतं किमतं खेत पायो। हरी सिंह किपाल के जोर धायो।
लीए सात सिखं कीए लोह गारे। जुझे संगती सिंह दुरगै सिधारे।
प्रभुजुध के हेत को खान आयो। किपा काल के राह बीचै खपायो। (सिंह,2017,पृष्ठ-77)

युद्ध एक समाजिक प्रक्रिया है जो समाज के एक पहलु को दर्शाने का कार्य करता है। कवियों का साहित्य गुरु गोबिंद सिंह के और तत्कालीन समाज को प्रस्तुत करता है। युद्धपरक रचनाओं के अतिरिक्त कवियों द्वारा प्रेम-कथाओं को आधार बनाकर भी रचनाएँ की गई। प्रेम साहित्य और समाज का एक

महत्वपूर्ण अंग है। इस कारण समाज में जो घटित हो रहा है उसी को साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। विद्या दरबार के दरबारी कवियों ने अनेक प्रेम कथाओं और गाथाओं को लेकर अपनी रचनाएँ की। इसमें गुरु दास द्वारा रचित 'कथा हीर राँझा की' तथा 'सखी हीरा घाट की' प्रसिद्ध है। 'कथा हीर राँझा की' रचना पंजाबी भाषा में लिखी गई है। इसमें अनेक प्रसंग जैसे हीर का नखशिख वर्णन, युद्ध वर्णन, हीर राँझा मिलन, बारात वर्णन, विरह वर्णन और हीर और काज़ी के संवाद सम्मिलित हैं। जो कथा को सुन्दर रूप देने का कार्य करते हैं। रीतिकालीन कवियों की एक महत्वपूर्ण विशेषता नखशिख वर्णन और श्रृंगारिकता भी रही है। उसका प्रभाव इस कृति में भी पूर्ण रूप से देखा जा सकता है। कवि हीर के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए लिखता है-

तीन बरख की जब ही भई। खेलन की बुध तिह निरमई।
खेलै डोलै बीथन मांही। मात पिता अति ही सुख पांही।
बरख सात जब भए बितीता। बाहर निकसी खेलन प्रीता।
तीन बरख जब अउर बिहाने। चपलाई अर लज्जा माने।
बरख दुआदस जबहुं पहुँची। धरन लगी ग्रीवा अति ऊँची।
मुसकै अखीआँ फुरके ओठा। ठौर ठौर सखीअनि के जोठा।
तिह संग खेल अति रस कीनी। दई अवस्था अवरै दीनी। (भूषण,1976,पृष्ठ-202)

गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रसिद्ध दरबारी कवियों ने जिस प्रकार उच्च कोटि के प्रबंध और मुक्तक काव्य लिखे। इसके पश्चात् हमें 'चन्दन' कवि द्वारा रचित एक कवित्त में शृंगारिक पक्ष दिखाई पड़ता है जिसमें नायिका के विरह का वर्णन करते हुए कवि लिखता है-

"नवसात तिये, नवसात किये, नवसात पिए, नवसात पियाये।
नवसात रचे,नवसात वदे, नवसात पया पहि दायक पाए।
जीत कला नवसात की, नवसात के मुख अंचर छाए।
मानहु मेघ के मंडल मैं कवि चन्दन चंद कलेबर छाए।" (सिंह,2015,पृष्ठ-199)

प्रेम कथाएं समाज और साहित्य को एक साथ जोड़कर रखने का कार्य करती हैं। जो कथाएं या लोकगाथाएं समाज के साथ जुडी होती हैं, उन्हीं को आधार बनाकर कवि उन्हें साहित्य के रूप में प्रस्तुत करता है। गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबारी कवियों की यह रचनाएँ समाज के अनेक पहलुओं को दर्शाने का कार्य करती हैं। सामाजिक दृष्टि से यह रचनाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इन रचनाओं से तत्कालीन समाज और परिस्थितियाँ, लेखक की स्थिति, लेखक की दृष्टि आदि का पता चलता है।

संस्कृति वह समष्टि है जिसके अंतर्गत मनुष्य द्वारा बनाए गए तथा उपार्जित वे सभी ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, न्याय और रीति रिवाज आ जाते हैं। जो व्यक्ति समाज के सदस्य होने के नाते

प्राप्त एवं ग्रहण करता है। इस दृष्टिकोण से गुरु गोबिंद सिंह जी और उनके विद्या दरबार के कवियों का अवलोकन करने से सहज यह बात सामने आ जाती है कि इनका साहित्य न केवल धार्मिकता का साहित्य है, बल्कि यह एक ऐसा अनमोल साहित्य है जिसमें भारतीय संस्कृति की झलक पूर्ण रूप से दिखाई देती है। इस अध्याय के अंतर्गत विद्या दरबार के कवियों के साहित्य के एक ऐसे पक्ष की व्याख्या करेंगे जिसमें भारतीय संस्कृति को आधार बनाया गया है। इसमें हम साहित्य के सांस्कृतिक पक्ष को विस्तृत रूप में व्याख्यायित करेंगे। रीतिकाल में जब कवियों द्वारा साहित्य की सृजना हो रही थी उस समय भारतीय संस्कृति का ह्रास हो रहा था। समाज भोग विलास की ओर इस प्रकार अग्रसर हो रहे थे कि उनका भक्ति और संस्कृति से दूर-दूर तक कोई भी संबंध नहीं था। लोग रीति रिवाजों, कार्यों, संस्कारों, ज्ञान और नैतिकता के द्वारा एक ऐसे रूप को प्रकट कर रहे थे कि सहज ही सामान्य जनमानस उदासीन होता जा रहा था। ऐसी परिस्थितियों में गुरु गोबिंद सिंह और उनके दरबारी कवियों ने भारतीय संस्कृति के बिगड़ते स्वरूप को सबारने का प्रयास किया और ह्रास की ओर उन्मुक्त समाज को उत्थान की ओर अग्रसर करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। साथ ही गुरु गोबिंद सिंह और दरबारी कवियों ने अध्यात्मिक मूल्यों और नैतिक कार्यों की और समाज का ध्यान एकाग्र किया। उनके विद्या दरबार में उन्होंने अनेक ग्रंथों का भाषानुवाद किया। ताकि सामान्य जनमानस उसे आसानी से समझकर उसके मार्ग पर चल सके। उनके द्वारा किये गए कार्य भारतीय संस्कृति का संरक्षण करते हैं। इन कवियों ने भक्तिपरक और भारतीय संस्कृति से जुड़ी अनेक रचनाओं की सृजना की।

भारतीय परम्परा में गुरु वंदना भारतीय संस्कृति का हिस्सा मानी जाती है। गुरु को भगवान से ऊँचा दर्जा प्राप्त है। इसी तरह गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबारी ने भी गुरु गोबिंद सिंह जी की महिमा का बखान कर उन्हें ईश्वर और गुरु के रूप में स्वीकार किया। सुदामा कवि गुरु गोबिंद सिंह की महिमा का वर्णन करते हुए स्वयं को 'सुदामा' कहकर सम्बोधित करता है-

"एक संग पढ़े अवंतिका संदीपन के
सोई सुध आई तो वुलाई भुझी वामा मैं
पुंगीफल होति तौ असीस देतो नाथ जी कौ,
तन्दुक ले दीजै बांध लीजे फटे जामा मैं
दीन दुआर सुनि कै दयार दरबार मिले,
ऐतो कुछ दीनो पाई अगनती सामा मैं,
प्रीत करि जाने गुरु गोबिंद कै मानें
तंती बहै 'सुदामा' मैं ....." (सिंह,1935,पृष्ठ-371)

सुखदेव मिश्र द्वारा रचित **'अध्यात्म प्रकाश'** भी उन्हीं रचनाओं में शामिल है। इस ग्रन्थ का आधार बादरायण व्यास का **'ब्रह्मसूत्र'** ग्रन्थ है। यह रचना गुरु शिष्य के प्रश्नोत्तर पर आधारित है। उन्होंने गुरु शिष्य के प्रश्नोत्तर रूप में आत्मा के स्वरूप एवं गूढ़ तत्व ज्ञान सम्बन्धी विषय को सरलता और सहजता से स्वाभाविक भाषा में दर्शाया है। इसके पश्चात् इसी क्रम में सुखदेव द्वारा रचित रचना **'ज्ञान प्रकाश'**

को देखा जा सकता है। यह रचना भी अध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जा सकती है। इसका विषय 'अध्यात्म प्रकाश' की प्रतिछाया है। परन्तु कुछ छन्दों का स्वरूप भिन्न दिखाई पड़ता है। गोपाल राय द्वारा रचित रचना '**अनुभव उल्लास**' अध्यात्मिक और भक्ति की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण रचना है।

"1 ओंकार सतिगुरुजी सहाइ।
अथ अनुभउ उल्लास
नमो सचिदानन्द अपन पौ परम अनूपा,
गुरु गोबिंद गणेश सारदा सकल सरुपा।"1

गुरु की महिमा का वर्णन करना हमारी परम्परा में प्राचीन समय से चला आ रहा है। शिष्य अपने गुरुओं की महानता के बारे में साहित्य के रूप में वर्णन करते आये हैं। गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवियों ने भी गुरु गोबिंद सिंह के जीवन को बड़े ही अनोखे रूप में वर्णित किया है। उनके द्वारा रचित साहित्य गुरु गोबिंद सिंह जी की उदारता और महानता का उदहारण है।

अणीराय गुरु से मिले, दीनी ताही असीस
आउ कह्यो मुख आपने, बहुर करी बखसीस। 1
नग कंचन भूखन बहुर, दीने सतिगुर एह।
नामा हुकम लिखाय के, दीनो सरस सनेह। 2" (गोयल,1998,पृष्ठ-18)

दरबारी कवियों में प्रसिद्ध अमृतराय ने महाभारत के 'सभा पर्व' का सरल भाषा में भाषानुवाद किया। ताकि सामान्य जन मानस को उसे समझने में कठिनाईयों का सामना न करना पड़े। इस क्रम में **हंसराम** का नाम भी प्रसिद्ध है। गुरु गोबिंद सिंह जी ने हंसराम कवि को भी महाभारत के भाषा रूपांतरण करने का कार्य सौंपा था। उन्होंने गुरु गोबिंद सिंह जी के आदेश पर महाभारत के 'कर्ण पर्व' का भाषारुपांतर किया था। 'कर्ण पर्व' को कवि द्वारा सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया गया है। रचना का आरम्भ गणेश और शिव स्तुति से होता है। इसके पश्चात दो दोहों में गुरु गोबिंद सिंह जी का वर्णन दिखाई पड़ता है।

कीन बड़ो या जगत मैं, को दाता को सूर।
काके रन अरु दान मैं, मुष पर बरसत नूर ॥३॥
रचिअ ब्रह्म करि आपने, दीनों भुव को भार।
सो तो गुर गोविन्द है, नानक को अवतार ॥४।

मंगल कवि ने गुरु गोबिंद सिंह जी ने इन्हें महाभारत के **'शल्य पर्व'** के भाषा रूपांतरण का कार्य दिया था। इस पर्व के अनुवाद का कार्य मंगल कवि ने संवत 1753 में किया था। (सिंह,1969,पृष्ठ-353)

टहकन के गुरु साहिब के दरबारी कवि होने का पता उनकी रचना अश्वमेध पर्व के भाषा-रूपांतरण से लगाया जाता है। **'अश्वमेध पर्व'** रचना दो भागों में विभाजित है। यह रचना 73 अध्यायों में विभक्त है। प्रथम भाग में कवि ने अश्वमेध यज्ञ की कथा का वर्णन किया। द्वितीय अध्याय में दान-महिमा का सुन्दर चित्रण किया है। रचना के आरम्भ में कवि ने गणेश स्तुति की है। तथा उसके बाद शारदा और भवानी की स्तुति कर रचना का आरम्भ किया है।

"बरनो कथा सुधा रस सानी।
कहो जथामत उक्त कहानी।
प्रथमे सूर भाखा सुनि लीनी।
दोहा सरस चौपाई कीनी।
कहूँ कवित्त सोरठा की गति।
टहकन बरनन किउ अलपमति।

कुबरेश गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबारी कवियों में प्रसिद्ध थे। उन्होंने महाभारत ग्रन्थ के **'द्रोण पर्व'** का भाषा रूपांतरण किया। गुरु साहिब के दरबारी कवियों ने अधिकतर रचनाएँ गुरु साहिब को केंद्र में रख कर की। उसी प्रकार कुबरेश कवि ने 'द्रोण पर्व' में नौ गुरुओं की परंपरा का उल्लेख कर दशम गुरु के परिचय के साथ अपने गाँव का वर्णन किया।

"गुरु गोबिंद नरिन्द हैं तेग बहादुर नन्द।
जिन ते जीवन है सकल भूतल कवि बुध ब्रिंद।
नदी सतुद्रव तीर तहिं शुभ आनंदपुर नाम।
गुरु गोबिंद नरिन्द के राजत सुभग सुधाम।
गंगा जमना बिच में 'बरी' ग्राम को नाम।
तहाँ कवि कुरबेश को, बास करै को धाम।

'चाणक्य नीति' का भारतीय समाज में एक अलग स्थान माना जाता है। संस्कृत साहित्य में नीतिपरक रचनाओं का विशेष स्थान है। मध्यकाल से ही चाणक्य नीति को लोकप्रियता प्राप्त थी। इसी कारण गुरु गोबिंद सिंह जी ने महाभारत ग्रन्थ के भाषानुवाद के साथ-साथ चाणक्य नीति का भी अनुवाद करवाया। गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा चलाई गई इस साहित्यिक यात्रा में इस ग्रन्थ की भी महत्वपूर्ण

भूमिका रही है। 'चाणक्य नीति भाषा' ग्रन्थ संस्कृत में रचित चाणक्य नीति का भाषा रूपांतरण है। इस ग्रन्थ को उन्होंने गुरु दरबार में रहकर लिखा-

"गुरु गोविंद की सभा महिं लेखक परम सुजान।
चणाकै भाषा करी कवि सेनापति नाम।

यह रचना मुख्यतः पंजाबी भाषा में लिखी गयी है। जिसका सुन्दर रूप व्यवस्थित ढंग से दिखाई पड़ता है।

मूल चाणक्यनीति -

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे।
सर्वे न गुणिनः सन्ति चन्दनं न वने वने।

चाणक्यनीति भाषा -

शैल शैल माणिक नहीं, गज गज मुकता नांहि।
बन बन मैं चन्दन नहीं, साधु न पुर पुर मांहि। (सिंह,(2021,पृष्ठ- 33)

इसके अतिरिक्त **लक्खण** कवि का नाम भी इसी क्रम में शामिल है। उनकी एकमात्र रचना '**हितोपदेश भाषा'** उपलब्ध है।

मूल हितोपदेश-

सिद्धिः साध्ये सतामस्तु प्रसादात्तस्य धूर्जटेः।
जाह्नवीफेनलेखेव यन्मूर्धिन शशिनः कला।

हितोपदेश भाषा-

ससि की कला बिराजती, महादेव कै सीस।
जोर जुगल कर यों कहौ, सिद्ध करौ गन ईस॥
कैसी कला बिराजती, बुध जन करत विचार।
मनो गंगजल फेन की, रेषा अगम अपार॥ (भूषण,1976,पृष्ठ-293)

इस प्रकार कहा जा सकता है कि इन कवियों ने अपनी प्रतिभानुसार अपने साहित्य का निर्माण किया। इन सभी रचनाओं में अनेक भिन्नताएं दिखाई पड़ती हैं। रचनात्मक तथा भाषात्मक दृष्टि से इनमें अनेक अंतर देखने को मिलते हैं। विद्या दरबार के अधिकांश कवियों ने सरल भाषा का प्रयोग किया है परन्तु कई कवियों की भाषा में कठिन शब्दों का प्रयोग देखने को भी मिलते है जिस कारण कहा

जा सकता है कि इन कवियों ने भाषा को नया रूप देने का भी कार्य किया। रचनात्मक दृष्टि से देखें तो मुख्यतः कवियों ने महाभारत का मूल रूप से अनुसरण किया है परन्तु कुछ कवियों की रचनाओं में अन्य छंद भी शामिल हैं। इसलिए यह कहना उचित होगा की यह कवि भाषा और रचना की दृष्टि से उच्च कोटि के थे। जिन्होंने रीतिकालीन साहित्य को नवीन रूप प्रदान करने का कार्य किया।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि मध्यकालीन भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के समन्वयात्मक विकास में गुरु गोबिंद सिंह और उनके विद्या दरबार के दरबारी कवियों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन कवियों ने सामाजिक और सांस्कृतिक विचारों के प्रति निष्ठा व्यक्त करते हुए प्रेम और भक्ति की भावना को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साहित्य के क्षेत्र में इन कवियों के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। इन्होनें अपनी रचना के माध्यम से न केवल वातावरण को प्रेममय बनाने में अहम भूमिका निभाई। इन सभी कवियों ने जीवन के हर क्षेत्र में एकता स्थापित करने का सफल प्रयास किया। इसलिए यह कहना निरर्थक न होगा कि जहाँ एक ओर देश की संस्कृति एवं समाज के निरूपण में अपना उल्लेखनीय कार्य किया वहीं दूसरी ओर समकालीन सांस्कृतिक उत्थान में भी अपना मूल्यवान योगदान दिया। इनका प्रेममय साहित्य तथा उदारवादी दृष्टिकोण आज भी अनुकरणीय है। किसी भी साहित्य का सृजन किसी अद्वितीय प्रतिभा से नहीं होता बल्कि उसके अपने समय के समाज, युग और परिवेश के बिना साहित्य की कल्पना भी असंभव है। कवि रचना करता है, परन्तु वह स्वयं के लिए नहीं करता, वह हमेशा दूसरों तक रचना पहुँचाना चाहता है। वह दूसरों से समर्थन की आशा करके दूसरों से स्वीकृति चाहता है। अतः हम कह सकते हैं की कोई भी कृति पाठक तक पहुँच कर ही पूर्ण हो सकती है बिना पाठक के उसका कोई अस्तित्व नहीं। गुरु गोबिंद सिंह जी के विद्या दरबार के कवियों ने भी अपनी कृति को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाने का कार्य किया ताकि वह कृति के मर्म तक पहुँच सकें। वह उस समय की तत्कालीन परिस्थितियों को आधार बनाकर रचना कर रहे थे क्योंकि वह सामान्य जनता को तत्कालीन परिस्थितियों से लड़ने के लिए प्रेरित कर सकें।

संदर्भ-

1. सिंह, जोध, (1990), श्रीदसमग्रन्थ,(पहली सैंची), लखनऊ: भुवन वाणी ट्रस्ट, पृष्ठ-169
2. सिंह, महीप (2002), भारतीय साहित्य के निर्माता: गुरु गोबिंद सिंह, नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, पृष्ठ-25

3. सिंह, मोहनजीत, (1991), गुरु गोबिंद सिंह और उनकी हिन्दी रचनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन, पटियाला: भाषा विभाग पंजाब, पृष्ठ-535
4. सिंह, गंडा, (2017), कवि सेनापति रचित:गुरु शोभा (पंजाबी), पटियाला: पब्लिकेशन ब्यूरो पंजाबी यूनिवर्सिटी, पृष्ठ-79
5. सिंह, महीप, (2002), भारतीय साहित्य के निर्माता: गुरु गोबिंद सिंह, नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, पृष्ठ-35
6. सिंह, सरबजीत, (2014) ,गुरु गोबिंद सिंह,नई दिल्ली:के, के प्रकाशन,पृष्ठ-06
7. सिंह, महीप, (1969), गुरु गोबिंद सिंह और उनकी हिंदी कविता, नई दिल्ली: नेशनल पब्लिकेशन हॉउस, पृष्ठ-349
8. सिंह, संतोख,(2011), श्री गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ, पंजाब: भाषा विभाग,पृष्ठ-5723
9. पन्नू , हरपाल सिंह, (2019), पौंटा साहिब से हजूर साहिब तक, बठिंडा: पंजाब केसरी यूनिवर्सिटी, पृष्ठ-17
10. गोयल, जयभगवान (1998), जंगनामा गुरु गोबिंद सिंह, चंडीगढ़: पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाब यूनिवर्सिटी, पृष्ठ-21
11. सिंह, चेतन, (2023), पुरातन सिख साहित्य संग्रह, अमृतसर: इनडरस्ट्रियल, फोकल पॉइंट पृष्ठ-114
12. सिंह, गंडा, (2017), कवि सेनापति रचित:गुरु शोभा (पंजाबी), पटियाला: पब्लिकेशन ब्यूरो पंजाबी यूनिवर्सिटी पृष्ठ-77
13. गोयल, जयभगवान, (1967), सेनापति कृत:गुरु शोभा (हिंदी), चंडीगढ़: पंजाब यूनिवर्सिटी प्रेस,पृष्ठ-22
14. भूषण, भारत, (1976), गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, दिल्ली: स्वस्तिक साहित्य सदन, पृष्ठ-202
15. सिंह, कुलदीप सोढ़ी, (2015), बादशाह दरवेश:गुरु गोबिंद सिंह, पटियाला: संगम पब्लिकेशन, पृष्ठ-199
16. सिंह, डॉ जसवंत, (1935), श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का संक्षिप्त जीवन परिचय और अमृत वाणी, पृष्ठ-371
17. गोयल, जयभगवान (1998), जंगनामा गुरु गोबिंद सिंह, चंडीगढ़: पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाब यूनिवर्सिटी, पृष्ठ-18

18.सिंह, महीप, (1969), गुरु गोबिंद सिंह और उनकी हिंदी कविता, नई दिल्ली: नेशनल पब्लिकेशन हॉउस, पृष्ठ-353
19.सिंह, हरि (टीकाकार),(2021), पञ्च ग्रंथावली सटीक (चाणक्य निति), अमृतसर:इंडस्ट्रियल फोकल प्वाइंट, पृष्ठ-33
20.भूषण, भारत, (1976), गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, दिल्ली: स्वस्तिक साहित्य सदन, पृष्ठ-293

डॉ. नरेश कुमार
सह-आचार्य
पंजाबी एवं डोगरी विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला
मो): 9878889269
ईमेल: nareshaman2002@hpcu.ac.in